तरह स्वीकार करो। स्वीकार का यह अर्थ नहीं है कि उसे रूपान्तरित करने की जरूरत नहीं है। तब जीवन में यह जानकर गति करो कि लोभ है। तुम जो भी करो यह स्मरण रखकर करो कि लोभ है। यह बोध तुम्हें रूपान्तरित कर देगा। बोधपूर्वक तुम लोभी नहीं हो सकते, बोधपूर्वक तुम क्रोधी नहीं हो सकते। क्रोध के लिए, लोभ के लिए, हिंसा के लिए मूर्च्छा बुनियादी शर्त है। यह वैसा है जैसे तुम जानबूझकर जहर नहीं खा सके, जानबूझकर तुम अपना हाथ आग में नहीं डाल सकते; अनजाने ही ऐसा कर सकते हो।

जैसे-जैसे तुम्हारा ज्ञान, तुम्हारा बोध बढ़ेगा, वैसे-वैसे लोभ तुम्हारे लिए आग बन जाएगा, क्रोध जहर बन जाएगा। तब वे बस असंभव हो जाते हैं। और दमन न हो, तो वे विसर्जित हो जाते हैं। और जब लोभ अलोभ के आदर्श के बिना विसर्जित होता है, तो उसका अपना ही सौंदर्य है। जब हिंसा अहिंसा के आदर्श के बिना विसर्जित होती है, तो उसका अपना ही सौंदर्य है।

अन्यथा जो व्यक्ति आदर्श के अनुसार अहिंसक बनता है वह गहरे में हिंसक, अति हिंसक बना रहता है। वह हिंसा उसमें छिपी रहती है और तुम्हें उसकी झलक उसकी अहिंसा में भी मिल सकती है। वह अपनी अहिंसा को अपने पर और दूसरों पर बहुत हिंसक ढंग से लादेगा। उसकी हिंसा सूक्ष्म ढंग ले लेगी। यह सूत्र कहता है कि स्वीकार रूपान्तरण है, क्योंकि स्वीकार से बोध संभव होता है।

भाग-5

प्राथमिकताओं का पुनरावलोकन

समाज और धर्मतन्त्र अब शंखनाद करें, सुदर्शन चक्र धारण करें।

प्रवृत्तियों, संस्कार एवं आचरण के आधार पर समाज के दो भाग होते हैं : 1. समाज समर्थक (कर्तव्य पोषक), 2. समाज विरोधी (अधिकार पोषक)। काल और परिस्थितियों के अनुरूप प्रवृत्तियों को विकास एवं दिशा प्राप्त होतो है। परिस्थितियां तीन प्रकार की हैं :

1. सामान्य काल, 2. संघर्ष काल, 3. आपात्काल।

1. सामान्यकाल : जब समाज विरोधी तत्व दबे हुए हों, तो सामान्य काल होता है। सामान्य काल में ऋषि-मुनि और विचारक समाज सुधार तथा आध्यात्मिक उन्नति का कार्य करते हैं, एवं शासन भौतिक उन्नति का।

2. संघर्षकाल : जब सामाजिक और समाज विरोधी तत्वों के बीच संघर्ष चल रहा हो, तो उसे संघर्ष काल कह सकते हैं। संघर्ष काल में ऋषि-मुनि और विचारक, समाज सुधार तथा आध्यात्मिक उन्नति का ही कार्य करते रहते हैं, और शासन समाज विरोधी तत्वों पर नियंत्रण का।

3. आपात्काल : जब सामाजिक शक्तियां परास्त हो गई हों, तो उसे आपातकाल कहेंगे। आपातकाल में शासन या तो अपराधियों का हो जाता है, या उनसे परास्त हो जाता है। अतः विचारकगण तथा ऋषि-मुनि सब मिलकर, समाज विरोधी तत्वों या अपराधियों पर नियंत्रण का कार्य करते हैं। ऐसे समय सम्पूर्ण समाज को चाहिये कि वह शासन की सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथ में लेकर, शासन को तब तक के लिये अपदस्थ कर दें, जब तक स्थिति नियंत्रण में न हो जावे।

तात्कालिक वर्तमान परिस्थितियां, आपात्काल के समकक्ष होते हुए भी, यह कैसे संभव है कि समाज सम्पूर्ण व्यवस्था अपने हाथ में ले लें? यदि ऐसा होना संभव हो, तो इसका मार्ग क्या है?

वर्तमान परिस्थितियां आपात्काल के समकक्ष हैं, यह सही हैं। सभी राजनैतिक दलों ने सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग, राष्ट्रपति तथा देश के अधिकांश विचारकों की इच्छाओं का अनादर करते हुए, चुनाव सुधार अध्यादेश के द्वारा, अपराधियों के समक्ष घुटने टेक दिये। बहुत निर्लज्जता से, राजनैतिक दलों ने अपना-अपना आवरण हटा दिया है।

अब बारी है समाज की। समाज को चाहिये कि वह राजनैतिक दलों से अपना मोहभंग कर ले और एकजुट होकर, आपात्कालीन योजनाओं पर कार्य शुरू कर दें। आपात्काल में धर्मतन्त्र या समाज सुधारकों द्वारा चरित्र सुधार, समाज सुधार, आध्यात्म और विकास की चर्चाएं या तो धूर्तता मानी जायेंगी अथवा नासमझी। कुल मिलकर, सब सम्मिलित होकर, शासन को अधिकारविहीन करने की पहल करें। एक बार शासन जब अधिकार, हस्तक्षेप, और सत्ताविहीन हो जावेगा, तो फिर बैठकर नई व्यवस्था तथा नये शासन की स्थापना संभव होगी। यह कार्य असंभव दिखता है, और शायद है भी। परन्तु इसके अतिरिक्त